टोड

अनुराग शर्मा

टोड

"देखो, देखो, वह टोड मास्टर और उसकी क्लास!" चिंटू खुशी से उछलता हुआ अंदर आया।

मैंने उसे देखा और मुस्करा दिया। वह इतने भर से संतुष्ट न हुआ और मेरा हाथ पकड़कर बाहर खींचने लगा।

"बस ये दो पन्ने खत्म कर लूँ फिर आता हूँ" मैंने मनुहार के अंदाज में कहा।

"तब तक तो क्लास डिसमिस भी हो जाएगी..." उसने हाथ छोड़े बिना अपनी मीठी वाणी में कहा।

"देख आओ न, बच्चे कॉलेज चले जाएँगे तब अकेले बैठकर तरसोगे इन पलों के लिए..." चिंटू की माँ ने रसोई में बैठे-बैठे ही तानाकशी का यह मौका झट से लपक लिया।

"अकेले रहें मेरे दुश्मन! मैं तो तुम्हें सामने बिठाकर निहारा करूँगा" मैं भी इतनी आसानी से आउट होने वाला नहीं था।

"हाँ, मैं बैठी रहूँगी और बना बनाया खाना तो आसमान से टपका करेगा शायद" उन्होंने नहले पे दहला जड़ा।

मैं चिंटू के साथ बाहर आया तो देखा कि लॉन के एक कोने में एक बड़े से टोड के सामने तीन छोटे टोड बैठे थे। नन्हें बच्चे की कल्पनाशीलता से होठों पर मुस्कान आ गई। सचमुच बच्चों के सामने टोड मास्टर जी बैठे थे।

टोड मास्टर जी कक्षा के बाहर अपनी कुर्सी पर बैठे हैं। सभी बच्चे सामने घास पर बैठे हैं। मैं, दिलीप, संजय, प्रदीप, कन्हैया, सभी तो हैं। सर्दियों में कक्षा के अंदर काफी ठंड होती है सो धूप होने पर कई अध्यापकगण अपनी कक्षा बाहर ही लगा लेते हैं। टोड जी भी ऐसे ही दयालुओं में से एक हैं। वैसे उनका वास्तविक नाम है आर.पी. रंगत मगर आजकल वे सारे स्कूल में अपने नए नाम से ही पहचाने जाने लगे हैं।

प्रायमरी स्कूल की ममतामयी अध्यापिकाओं की स्नेहछाया से बाहर निकलकर इस जूनियर हाईस्कूल के खडूस, कुंठित और हिंसक मास्टरों के बीच फंस जाना कोई आसान अनुभव नहीं था। गेंडा मास्साब ने एक बार संटी से मार-मारकर एक छात्र को लहूलुहान कर दिया था। छिपकल्ली ने एक बार जब डस्टर फेंककर मारा तो एक बच्चे की आँख ही जाती रही थी।

सारे बच्चे इन राक्षसों से आतंकित रहते थे। डरता तो मैं भी था परंतु रफी हसन के साथ मिलकर मैंने बदला लेने का एक नया तरीका निकाल लिया था। हम दोनों ने इस

जंगलराज के हर मास्टर को एक नया नाम दे दिया था। उनके नाक-नक्श, चाल-ढाल और जालिम हरकतों के हिसाब से उन्हें उनके सबसे नजदीकी जानवर से जोड़ दिया था।

जब हमारे रखे हुए नाम हमारी आशा से अधिक जल्दी सभी छात्रों की जुबान पर चढ़ने लगे तो हमारा जोश भी बढ़ गया। आरंभ में तो हमने केवल आसुरी प्रवृत्ति के शिक्षकों का नामकरण किया था परंतु फिर धीरे-धीरे सफलता के जोश में आकर हमने एक सिरे से अब तक बचे हुए भले मास्टरों को भी नए नामों से नवाज दिया। हमारे अभियान के इसी दूसरे चरण में श्रीमान आरपी रंगत भी अपनी खुरदुरी त्वचा के कारण मि. टोड हो गए।

तालियाँ बजाते चिंटू के उत्साह को दिल की गहराइयों तक महसूस करने के बावजूद न जाने क्यों मुझे आरपी रंगत के प्रति किए हुए अपने बचपने पर एक शिकायत सी हुई। उस हिंसक जूनियर हाईस्कूल के परिसर में एक वे ही तो थे जो एक आदर्श अध्यापक की तरह रहे। अन्य अध्यापकों की तरह मारना-पीटना तो दूर उन्होंने अपने घर कभी भी ट्यूशन नहीं लगाई। विद्यार्थी कमरुद्दीन की किताबों का खर्च हो चाहे चौकीदार मूखरदीन की टॉर्च की बैटरी हो, सबको पता था कि जरूरत के समय उनकी सहायता जरूर मिलेगी।

राम का गायन हो, आफताब की कला प्रतिभा, कृष्ण का अभिनय या मेरी वाक्शैली, इन सब को पहचानकर विभिन्न समारोहों का आकर्षण बनाने का काम भी उन्होंने ही किया था। अधिक विस्तार में जाने की जरूरत नहीं है परंतु एक बार जब परिस्थितियाँ ऐसी बनी कि निरपराध होते हुए भी मुझे विद्यालय से रस्टीकेट होने का समय आया तो मेरी बेगुनाही पर उनके विश्वास के चलते ही मैं बच सका था। यह सब ध्यान आते ही मुझे अपने ऊपर क्रोध आने लगा। अगर मेरे पास उनका फोन नंबर आदि होता तो शायद मैं उसी समय उनसे अपनी करनी की क्षमा माँगता। परंतु नंबर होता कैसे? मैंने तो वह स्कूल छोड़ने के बाद वहाँ की किसी भी निशानी पर दोबारा नजर ही नहीं डाली थी।

चिंटू की माँ कहती हैं कि मेरा चेहरा मेरे मन का हर भाव आवर्धित कर के दिखाता रहता है। पूछने लगी तो मैंने सारी कहानी कह डाली। उन्होंने तुरंत ही यह जिम्मेदारी अपने सर ले ली कि इस बार भारत जाने पर वे मुझे अपने पैतृक नगर अवश्य भेजेंगी, केवल रंगत जी से मिलकर क्षमा माँगने के लिए।

दिन बीते, एक रविवार को मैं दातागंज में था। उसी जूनियर हाईस्कूल के बाहर जहाँ की एक-एक ईट किसी पशु का नाम ले-लेकर मेरी कल्पनाशीलता पर तंज कस रही थी। सुनसान इमारत। बाहर मैदान में कुछ आवारा पशु घूम रहे थे। मैं स्कूल के फोटो ले रहा था तभी लाठी लिए एक बूढ़े ने पास आकर कहा, "हमरो भी एक फोटू ले ल्यो।"

मुझे तो बैठे-बिठाए एक अलग सा फोटो मिल गया था। मैंने अपने नए सब्जेक्ट को ध्यान से देखा, "अरे, तुम मूखरदीन हो क्या?"

"हाँ मालिक, आपको कैसे पतो लग्यो?"

"मैं यहाँ पढ़ता था, आरपी रंगत जी कहाँ रहते हैं आजकल?"

"आरपी रंगत..." वह सोचने लगा, "अच्छा बेSSS... बे तौ टोड हैंगे।"

"अबे तू भी तो मुर्गादीन था" मैंने कहना चाहा परंतु उसकी आयु के कारण शब्द मुँह से बाहर नहीं निकल सके, "हाँ, वही। कहाँ रहते हैं?"

"साहूकारे मैं, उतै जाए कै, पकड़िया के उल्ले हाथ पै" उसने हाथ के इशारे से बताया। मैंने उसका फोटो कैमरा के स्क्रीन पर दिखाया तो वह खफा दिखा, "निरो बेकार हैगो। ऐते बुढ़ाय गए का हम? कहूँ नाय, तुमई धल्ल्यो जाए।"

मैं तेज कदमों से साहूकारे की ओर बढ़ा। इसी कस्बे में कभी हमारा भी एक घर था। आज तो शायद ही कोई पहचानेगा मुझे। चौकीदार के बताए पाकड़ के पेड के सामने कुछ बच्चे क्रिकेट खेल रहे थे। "आरपी रंगत" का नाम किसी ने नहीं सुना था। जब मैंने बताया कि वे जूनियर हाईस्कूल में पढ़ाते थे तो सभी के चेहरे पर अर्थपूर्ण मुस्कान आ गई और वे एक-दूसरे से बोले, "अरे, टोड को पूछ रहे हैं ये।"

एक लड़का मुझे पास की गली में एक जर्जर घर तक ले गया। कुंडी खटकाई तो मैली धोती में एक कृषकाय वृद्ध बाहर आया। अधनंगे बदन पर वही खुरदुरी त्वचा।

"किससे मिलना है?" आवाज में वही चिरपरिचित स्नेह था।

"नमस्ते सर! सकल पदारथ हैं जग माही..." मैंने अदा के साथ कहा।

"अहा! होइहै वही जो राम रचि राखा..." उन्होंने उसी अदा के साथ जवाब दिया, "अरे अंदर आओ बेटा। तुम तो निरे गंजे हो गए, पहचानते कैसे हम?"

लगता था जैसे उनकी सारी गृहस्थी उसी एक कमरे में समाई थी। एक कुर्सी, एक मेज, और ढेरों किताबें। काँपते हाथों से उन्होंने खटिया के पास एक कोने में पड़े बिजली के हीटर पर चाय का पानी रखा और फिर निराशा से बोले, "अभी है नहीं बिजली।"

मैं एक स्टूल पर बैठा सोच रहा था कि बात कहाँ से शुरू करूँ कि उन्होंने ही बोलना शुरू किया। पता लगा कि उनके कोई संतान नहीं थी। पत्नी कब की घर छोड़कर चली गई क्योंकि वे जहाँ भी जाती आवारा और उद्दंड लड़कों के झुंड के झुंड उन्हें "मिसेज टोड" कहकर चिढ़ाते रहते थे।

जब तक नौकरी रही, लड़कों के व्यंग्य बाण सुने-अनसुने करके विद्यालय जाते रहे। अब तो जहाँ तक संभव हो घर में ही रहते हैं।

"जिंदगी नरक हो गई है मेरी" उनका विषाद अब मुझे भी घेरने लगा था।

वे अपनी बात कह रहे थे कि एक गेंद खिड़की से अंदर आकर गिरी। शायद उन्हीं लड़कों की होगी जो बाहर नुक्कड़ पर क्रिकेट खेल रहे थे। गेंद की आमद से उनकी कथा भंग हुई। उन्होंने एक क्षण के लिए गेंद को देखा फिर उठकर मेरी ओर आए और बोले, "तुम तो सबके चहेते छात्र थे। तुम्हें जरूर पता होगा। बताओ, मेरे साथ यह गंदा मजाक किसने किया?"

"मेरा नाम टोड किसने रखा था?"

तभी दरवाजा खुला और एक 7-8 वर्षीय लड़का अंदर आकर बोला, "हमारी गेंद अंदर आ गई है टोड।"